Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

बारां जिले के प्रमुख दुर्गो का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व

Anil Mermit*

Research Scholar, Department of History, Kota University, Kota, Rajasthan

सार – राजस्थान के अधिकांश राजवंशों ने बाह्य आक्रमणों की सुरक्षा हेतु अपने-अपने क्षेत्रों में अनेक दुर्गो का निर्माण करवाया। राजस्थान के अधिकांश दुर्गो का निर्माण सुरक्षा की भावना को ध्यान में रखते हुए करवाया गया है। राजस्थान में दुर्ग निर्माण की परम्परा काफी प्राचीन रही है। मध्यकाल में राजस्थान के दुर्गो के निर्माण-पुनः निर्माण में मेवाड़ शासक महाराणा कुम्भा व मारवाड के शासक राव मालदेव का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है।

---------------------------------x---------------------------------

सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए राजस्थान के अधिकांश दूर्गो का निर्माण पहाडियों पर किया गया हैं। इन दुर्गो में रक्षा के लिए अनेक सैन्य यंत्र भी रखे जाते थे। वर्तमान समय में दुर्ग न केवल हमारे लिए अतीत को संजोए हुए हैं अपितु पर्यटन के क्षेत्र में बाहरी लोगो से ‘‘पधारों महारे देश’’ का आह्वान भी कर रहे है। दुर्ग इतिहास की जानकारी के साथ-साथ पाठकों में राजस्थान भ्रमण की जिज्ञासा भी उत्पन्न करते है।

राजस्थान के ख्यातनाम दुर्ग शुरवीरों के पराक्रम अनुपम शोर्य, रोमांचक गाथाओं और बलिदान के साक्षी रहे है जो राष्ट्रीय इतिहास की अनमोल धरोहर है। राजस्थान के जनमानस को ये दुर्ग और इनसे जुडे आख्यान सदा से ही प्रेरणा देते आये है राजस्थानी कवियों ने इन्हें अपने काव्यों का उपजीव्य बनाने में स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया हैं तथा इन्हें अपने गीतो में गूंथकर अमर कर दिया है। प्राचीन एवं मध्य युग में राजनैतिक शासन व्यवस्था के होते सैन्य शक्ति के साथ दुर्ग भी एक सामरिक आवश्यकता थी। राज्य का अस्तित्व तब दुर्ग - रक्षा पर ही निर्भर करता था। यही कारण है कि प्रत्येक राज्य की राजधानी अनिवार्यतः दुर्ग में हुआ करती थी। मध्य युग में व्याप्त राजनैतिक अस्थिरता, सामाजिक असुरक्षा तथा आये दिन होने वाले उत्पातों एवं युद्धो की दुःखद विभीषिका के सन्दर्भ में दुर्गो के सामरिक महत्व का अनुमान लगाया जा सकता है।

बारां जिला शक्ति, शोर्य, बलिदान और भक्ति का हमेशा ही मुख्य केन्द्र रहा है यहां की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में धर्म प्रमुख रहा है। बारां अपनी गौरवमयी परम्पराओं के लिए विख्यात रहा है। वीरता और शोर्य की रोमांचक गाथाओं के लिए बारां जिले के दुर्ग प्रसिद्ध रहे है।

बारां क्षेत्र में पुरा सम्पदा की दृष्टि से मन्दिरों एवं मूर्तियों का तो महत्वपूर्ण स्थान है ही, साथ ही छोटे-बडे कई किले भी यहा विद्यमान है। इनमें से शाहबाद एवं शेरगढ के किले पुरातत्व की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखते है।

शाहबाद किला:-

शाहबाद किला चम्बल, काली सिंध तथा उनकी अन्य सहायक नंदियों से घिरा है। यह रणथम्भौर के पश्चात दूसरा महत्वपूर्ण एवं विकट दुर्ग माना जाता है। इस दुर्ग का निर्माण 9 वीं शताब्दी में परमार वंश के शासकों के द्वारा करवाया गया। कहा जाता हैं कि यह दुर्ग ब्राहमणों का है। एक अन्य मान्यता के अनुसार रणथम्भौर के प्रसिद्ध शासक हमीर देव चैहान के वंशज मुकटमणी देव ने (1521 ई.) में इस किले का निर्माण करवाया।

ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार शेरशाह सूरी कालिजंर अभियान जाते समय यहां से गुजरा था तो उसके पुत्र सलीम शाह के नाम से सलीमाबाद रखा गया। मुगलकाल में इसका नाम शाहबाद हो गया। औरगजेब अपनी दक्षिण योजना यात्रा के दौरान शाहबाद दुर्ग का उपयोग विश्राम स्थल के रूप में करता था। यह दुर्ग अपनी रहस्मय बावड़ी के लिए भी प्रसिद्ध रहा है। नवलबाग तोप अपनी मारक क्षमता के लिए प्रसिद्ध

www.ignited.in

थी। शाहबाद का दुर्ग अपने अंलकृत व विशाल दरवाजो के लिए भी प्रसिद्ध है।

शेरगढ़ किला:-

वर्तमान में बारां जिले की अटरू तहसील में परवन नदी के किनारे कोषवर्द्धन पर्वत शिखर पर स्थित इस दुर्ग को प्राचीन काल में ''कोषवर्द्धन'' नाम से जाना जाता था। शेरशाह ने इस दुर्ग का जीर्णोदार करवाया जिससे इसका नाम शेरगढ हो गया। नागवंशीय शासक देवदत्त को इस दुर्ग का निर्माता माना जाता है। मुंगल बादशाह फरूखशियर द्वारा यह दुर्ग कोटा से महाराव भीमसिंह को पुररस्कार स्वरूप दिया गया था। जालिम सिंह द्वारा निर्मित झालाओं की हवेली सबसे अधिक प्रसिद्ध है। शेरगढ दुर्ग साम्प्रदायिक सद्भाव की घटनाओं का भी साक्षी रहा है। कल्याणराय का प्रसिद्ध मन्दिर भी इसी दुर्ग में है।

नाहरगढ का किला:-

यह किला बारां से 51 कि.मी. दूर नाहरगढ कस्बे के मध्य स्थित है। इस किले का निर्माण सन 1526 ई. में ढोव के खींचीराज के पुत्र नाहरसिंह ने करवाया। औरगजेंब ने भी इस किले पर आक्रमण कर नाहरसिंह का धर्म परिवर्तन कर उसका नाम नेकखान रख दिया था। बाहर से इस किले की बनावट दिल्ली के लाल किले से मिलती-जुलती है। इसमें पहले महल थे लेकिन अब वे खण्डहर अवस्था में है। यहां स्थित महलों की छते उपर से सपाट हैं लेकिन उनका आकार गोल कटोरेनुमा है। यदि इस किले का जीर्णोद्वार करके अन्दर राजसी वैभव वाला होटल बनाया जावे तो यह पर्यटकों का प्रमुख केन्द्र हो सकता है।

गूगोर का किला:-

यह किला छबडा से 7 कि.मी. दूर स्थित है। किले के निकट परवन नदी बहती है। गूगोर के किले पर खींचियों का राज्य था। यहां से प्राप्त शिलालेखों में 1650 ई. खुदा हुआ हैं। सती महाराज अधिराज महाराज श्री गरीबदास की शालवाहन के पोते थे और ये दीपसिंह के बेटे थे। इनको गूगोर किले की गद्दी पर शाहजहां ने बिठाया था। किले के निर्माणकर्ता के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती है। यह किला बाहर से बडा ही आकर्षक लगता हैं, परन्तु परकोटे के अन्दर के लगभग सभी महल अब समाप्त हो चुके है। किले के नजदीक गूगोर माता का मन्दिर दर्शनीय है।

छबडा का किला:-

यह बांरा से 65 कि.मी. दूर पूर्व-दक्षिण दिशा में स्थित है। इस दुर्ग को खींची वंश के शासकों और नवाबी शासकों ने बनवाया था। पूरा छबडा नगर एक परकोटे में स्थित है तथा उपर पहाडी पर दुर्ग है। यह शिव एवं मजार भक्तों का केन्द्र है। दुर्ग की दीवारे खण्डहर अवस्था में है। महल केवल अवशेष मात्र है केवल शिव मन्दिर तथा मलंग बाबा की मजार स्थित है।

महत्व:-

आज युग परिवर्तन के साथ हमारे स्वर्णिम अतीत की यह अनमोल सम्पदा तेजी से नष्ट होती जा रही है। कई गढ, दुर्ग तो खंडहर भी हो चुके है और जो शेष है वे अपने अवसान की प्रतीक्षा में है। यदि समय रहते हमने इनकी सार-संभाल नहीं की तो वह दिन दूर नहीं जब ये सदा के लिए काल के गर्त में विलीन हो जाएंगे। सीमेंट और कंक्रीट की गगन चुम्बी इमारते तो बनती रहेगी परन्तु शोर्य और पराक्रम, त्याग और बलिदान के शाश्वत कीर्तिमान स्थापित करने

वाले, ''कीर्ति''के कमढाण अब नहीं बनने के वीरता और शोर्य के प्रतीक ये गढ और किले अपने अनूठे स्थापत्य, विशिष्ट संरचना तथा अदभूत शिल्प एवं सोन्दर्य के कारण दर्शनीय है जिन्हे देखने के लिए देशी-विदेशी पर्यटक राजस्थान आते है। विभिन्न राजवंशों के शोर्य और पराक्रम के साक्षी इन दूर्गो का अपना राजवंशीय और गौरवशाली इतिहास और विशेष सांस्कृतिक महत्व है। अपने अनुठे शिल्प और स्थापत्य विशिष्ठ संरचना तथा कलात्मक वैभव के कारण भी दर्शनीय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. अरविन्द भास्कर/ महेश शर्मा (2013) ''राजस्थान के प्रसिद्ध दुर्ग'' नाथ पब्लिकेशन, सीकर पृ.स. 94-96
2. राघवेन्द्र सिंह मनोहर (2018) ''राजस्थान के प्रमुख दुर्ग'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर पृ.स. 104, 107
3. रामकरण आसोपा – ''वंश भास्कर कृत सूर्यमल्ल मिश्रण'' प्रताप प्रेस उदयपुर भाग- 3, पृ.सं. 1625
4. दुर्गाप्रसाद माथुर (2010) ''बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास'' चित्रगुप्त प्रकाशन, बून्दी, पृ.सं. 1-2

www.ignited.in

5. जगदीश सिंह गहलोत-राजपूताना का इतिहास (बून्दी राज्य), पूर्वोक्त, पृ.सं.5

6. जगत् नारायण (2008) ''कोटा राज्य का इतिहास''भाग-1, राजधानी ग्रन्थागार, जोधपुर पृ.सं. 68-74

7. बंसल, सुरेश चन्द्र (1987) ''भारत का वृहत भूगोल'' मीनाक्षी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 7-8

8. भल्ला, एल.आर. (1985) ''राजस्थान का भूगोल'' कुलदीप पब्लिकेशन्स, अजमेर, पृ.सं. 52

Corresponding Author

Anil Mermit*

Research Scholar, Department of History, Kota University, Kota, Rajasthan